Date 14/05/2020 Page: 1 to 3

Saathi

B.A., PART- IST
POLITICAL SCIENCE
PAPER-I (BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY)
CH:9 (CONCEPT OF LIBERTY)
LECTURE NO. - 28 (TWENTY EIGHT)

BY; OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL. SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
LNMU, DARBHANGA

आर्थिक समानता और राजनीतिक स्वतंत्रता का सम्बंध-

राजनीतिक स्वतंत्रता आर्थिक समानता पर आधारित है। आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक है।

राजनीतिक स्वतंत्रता का तात्पर्य है- नागरिकों का राजनीतिक सहभागिता का उचित अवसर प्राप्त होना, जिसमें उन्हें मतदान देने, निर्वाचित होने, उचित योग्यता होने पर सार्वजनिक पद प्राप्त करने एवं सरकार के गलत नीतियों की आलोचना करने की आजादी हो। ये स्वतंत्रताएँ मुख रूप से तीन अनिवार्य परिस्थितियों पर निर्भर करती हैं जो इस प्रकार हैं —

(1) जनता में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति रुचि होनी चाहिए ताकि वह राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेने और शासन-व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए उत्सुक हो।

(2) व्यक्ति शिक्षित होने चाहिए ताकि वे स्वस्थ जनमत का निर्माण कर सकें और शासन की रचनात्मक आलोचना कर सकें। केवल शिक्षा ही नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता प्रदान करती है।

(3) राजनीतिक स्वतंत्रता के आदर्श को प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि व्यक्ति को सही सूचनाएँ

Scanned with CamScanner

Date __/__/____

और विचारों की जानकारी प्राप्त हो। इस कार्य को ठीक प्रकार से करने के लिए स्वस्थ और सबल प्रेस नितांत आवश्यक है।

उपर्युक्त वर्णित तीनों परिस्थितियों की विद्यमानता के लिए आर्थिक समानता अत्यन्त जरूरी है। जनता की न्यूनतम आवश्यकताओं जैसे- भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य आदि के प्राप्त करने के पर्याप्त साधन उपलब्ध कराए बिना वर्णित परिस्थितियाँ उत्पन्न नहीं हो सकती और जनता के द्वारा राजनीतिक स्वतंत्रता का उपभोग नहीं किया जा सकता। एक निर्धन व्यक्ति के लिए धर्म, ईमान और राजनीति आदि कुछ मायने नहीं रखता, उसे तो सिर्फ रोटी चाहिए। पंडित नेहरू के शब्दों में, 'भूखे व्यक्ति के लिए मत का कोई मूल्य नहीं होता।' जब मतदान के दिन निर्धन व्यक्ति अपनी पेट के लिए दिनभर मजदूरी करने को विवश होते हैं और इसी वजह से अपने मताधिकार का उपयोग नहीं कर पाते हैं, तब राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आर्थिक समानता की मौजूदगी के महत्व को समझा जा सकता है। वर्तमान समय में जिन राज्यों में धनी और निर्धन का भेद गम्भीर रूप से विद्यमान है, वहाँ धनी लोगों के द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है, निर्धनों को अपनी इच्छानुसार निर्वाचन प्रक्रिया में भाग लेने के लिए विवश किया जाता है और इस प्रकार आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं रह जाता है।

यदि साधारण व्यक्ति के पास अपना सामान्य जीवन जीने के साधन नहीं तो वह शिक्षित होने का विचार कैसे कर सकता है? ऐसा व्यक्ति राजनीतिक स्वतंत्रता का उपभोग करने में सक्षम नहीं होगा।

इसी प्रकार आर्थिक समानता के अभाव में

Scanned with CamScanner

Saathi

Date __/__/____

प्रेस और विचार एवं अभिव्यक्ति के सभी साधनों पर अमीर वर्गों का अधिकार हो जाता है और यह वर्ग इन साधनों का प्रयोग जनता को सही-सही जानकारी एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए नहीं वरन् एक प्रकार से अपने विचार दूसरों पर थोपने के लिए करता है। इस प्रकार आर्थिक समानता के अभाव में अमीर वर्ग निर्धन वर्ग के जीवन पर आधिपत्य स्थापित कर लेता है और निर्धन वर्ग का मनमाने ढंग से शोषण करता है। लॉस्की के अनुसार,

(i) "आर्थिक समानता के बिना राजनीति स्वतंत्रता कभी वास्तविक नहीं हो सकती है।"

(ii) "यदि राज्य सम्पत्ति को अधीन नहीं रखता, तो सम्पत्ति राज्य को वशीभूत कर लेगी।"

राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए आर्थिक समानता का रहना कितना जरूरी है, यह कोल महोदय के इस कथन से और स्पष्ट हो जाता है—
"आर्थिक समानता के अभाव में राजनीति स्वतंत्रता केवल एक भ्रम है।"

उपर्युक्त विवेचना के उपरान्त हम कह सकते हैं कि आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक है, एक भ्रम है।

संभावित प्रश्न:

- "आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता केवल एक भ्रम है।" (कोल) इस कथन की व्याख्या कीजिए।

Scanned with CamScanner